CBSE Test Paper 03

Ch-3 साँवले सपनों की याद

1. **निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

   कोई आज भी वृंदावन जाए तो नदी का साँवला पानी उसे पूरे घटना-क्रम की याद दिला देगा। हर सुबह, सूरज निकलने से पहले, जब पतली गलियों से उत्साह भरी भीड़ नदी की ओर बढ़ती है, तो लगता है जैसे उस भीड़ को चीरकर अचानक कोई सामने आएगा और बंसी की आवाज़ पर सब किसी के कदम थम जाएँगे। हर शाम सूरज ढलने से पहले, जब वाटिको का माली सैलानियों को हिदायत देगा तो लगता है जैसे बस कुछ ही क्षणों में वो कहीं से आ टपकेगा और संगीत का जादू वाटिका के भरे-पूरे माहौल पर छा जाएगा।

   i. यमुना नदी का साँवला पानी यात्रियों को कौन-कौन सी यादें ताज़ा करा देता है?
   ii. वृंदावन की सुबह अन्य स्थानों की सुबह से किस प्रकार भिन्न है?
   iii. शाम को वृंदावन में माली क्या करता है और क्यों ?

2. 'सालिम अली, तुम लौटोगे ना!' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

3. वृंदावन में सुबह-शाम क्या अनुभूति होती है? ‘साँवले सपनों की याद’ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

4. सालिम अली का यह सफर उनके दूसरे सफर से किस तरह भिन्न है?

5. सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री के सामने पर्यावरण से संबंधित किन संभावित खतरों का चित्र खींचा होगा कि जिससे उनकी आँखें नम हो गई थीं?

6. आशय स्पष्ट कीजिए-कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा!

CBSE Test Paper 03

Ch-3 साँवले सपनों की याद

Answer

1. i. यमुना नदी का साँवला पानी यात्रियों के मन में कृष्ण से जुड़ी अनेक यादें ताज़ा करा देता है, जैसे-
    - कृष्ण ने यमुना किनारे अनेक लीलाएँ की थीं।
    - यहीं पर कृष्ण ने गोपियों के साथ रासलीला की थी।
    - यमुना के किनारे कदंब के पेड़ की छाँव में वे मधुर वंशी बजाया करते थे।
    - कृष्ण ग्वालबालों के साथ मिलकर यहीं माखन चुराकर खाया करते थे।

    ii. वृंदावन की सुबह अन्य स्थानों की सुबह से बिलकुल अलग है। वहाँ ऐसा लगता है; जैसे अभी-अभी कृष्ण कहीं से आ जाएँगे और वंशी की मधुर तान बजाएँगे; जिसे सुनकर ब्रज के लोगों के कदम जहाँ के तहाँ ठिठक जाएँगे। लोग कृष्ण द्वारा वंशी बजाया जाना अब भी भूले नहीं हैं।

    iii. शाम को वृंदावन में माली यात्रियों को चेतावनी देता है कि कृष्ण अभी किसी भी कोने से कभी भी आ जाएंगे और मधुर वंशी बजाएँगे और उनकी मुरली का जादू सब पर छा जाएगा।

2. लेखक सालिम अली के स्वभाव से भली-भांति परिचित थे | वे रोज़ नियम से गले में दूरबीन लटकाएँ तथा कंधे पर बोझ टाँगें पक्षियों के विषय में जानकारी प्राप्त करने निकलते थे | कुछ समय पश्चात वे उनके बारे में दुर्लभ जानकारी एकत्रित कर लौट आते थे | आज उनकी मृत्यु के बाद भी लेखक को ऐसा ही लग रहा है कि आज भी सालिम अली हमेशा की तरह इस अंतहीन सफ़र से लौट आएँगे इसलिए लेखक ने ऐसा कहा है ," सालिम अली, तुम लौटोगे ना !"

3. 'साँवले सपनों की याद' पाठ में वर्णित वृंदावन में सुबह-शाम एक नितांत नवीन और मनोहारी अनुभूति होती है। ऐसा अनुभव होता है कि मानो कन्हैया (बालक कृष्ण) अभी वहीं कहीं से निकलकर अचानक प्रकट हो जाएँगे। यमुना के जल को देखकर महसूस होता है कि कृष्ण इसमें कालिया सर्प का मर्दन करते हुए नज़र आएँगे | कहीं पेड़ों की छाया में वे बाँसुरी बजाते हुए दिखाई देंगे। उनकी मोहक मुसकान और वंशी की मधुर तान को सुन सबके कदम रुक जाएँगे। अर्थात् सभी के मन में कृष्ण की यादें बसी हैं जो वृंदावन जाकर सजीव हो जाती हैं।

4. इस सफ़र से पहले जब भी सालिम अली अपने गले में दूरबीन लटकाए और कंधे पर थैला डाले पक्षियों के बारे में खोजबीन करने के लिए निकलते थे तो वे कुछ समय बाद ही उनके बारे में दुर्लभ जानकारियों के साथ लौटते। यह सफ़र उन सभी सफर से बिलकुल अलग था । यह वो अंतहीन सफ़र था जहाँ जाने के बाद वहाँ से कोई भी लौट कर नहीं आता इसलिए ये सफ़र उनके दूसरे सफ़र से भिन्न था।

5. सालिम अली ने तत्कालीन प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के पास केरल की "साइलेंट वैली" में चलने वाली रेगिस्तानी हवा के कारण पक्षियों को होने वाली समस्या का खाका खींचा | उन्होंने प्रकृति और पर्यावरण को प्रदूषण के दुष्प्रभाव से बचाने, पक्षियों की रक्षा, वनों की अंधाधुंध कटाई आदि से संबंधित बातें उठाई होंगी। चौधरी चरणसिंह किसान परिवार से

थे इसलिए उन्हें धरती से लगाव था | सालिम अली के मुख से ऐसी निःस्वार्थ बातें तथा पर्यावरण के प्रति उनकी चिंता जानकर चौधरी साहब की आँखें भर आईं होंगी।

6. सालिम अली अनूठे पक्षी प्रेमी थे। लेखक ने उनकी तुलना एक ऐसे पक्षी से की है जिसने अपने जीवन की लम्बी यात्रा को समाप्त कर दिया है और स्वयं मौत की गोद में सो गया है | इस पक्षी (सालिम) की नींद इतनी गहरी है कि दूसरों के शरीर की गर्मी और दिल की धड़कन देकर भी उसे जीवित नहीं किया जा सकता है। उनका पक्षी प्रेम का सपना मौलिक नहीं था वह तो उनका वह सपना था जिसे पूरा करने के लिए उन्होंने जीवन भर प्रयास किया । इस पक्षी को किसी की धड़कनों से जिंदा नहीं किया जा सकता | अर्थात् उनके सामने कोई अन्य पक्षी प्रेमी इस तरह नहीं उत्पन्न किया जा सकता है।